150
608 P
H
MICROFILM

राष्ट्रीय अभिलेखागार पुस्तकालय
NATIONAL ARCHIVES LIBRARY
भारत सरकार
Government of India
नई दिल्ली
New Delhi

1541/1977

आह्वानांक Call No.
अवाप्ति सं० Acc. No. 608

891.431
B469P

45 (608) 57

ॐ

नंई भारत

पुलिस का अत्याचार

पकाशक

चिरंजीलाल विद्यार्थी

मिलने का पता :-

पथिक एंड को दिल्ली

लेखक :- ठा० तमुक० मतिहार (बुनमास्टर)

ठे० ब० तमुक० मतिहार

NATIONAL ARCHIVES LIBRARY
No. 608
Date 15-12-71
GOVT. OF INDIA

ॐ

छटी मई सन तीस को दिल्ली में गोली चलवाई थी।
ज़ालिम गवरमिन्ट ने बेकर दुन्या को भरवाई थी॥
चार मई सन तीस कराड़ी में रक ज्वाला आई थी।
आधी रात चोर की माफ़िक़ कुटिया आन दबाई थी॥
सुपरुंडेंट पुलिस का ब्राहन उसने करी चढ़ाई थी।
मय हथियारों बीस सिपाही संग में लारी आई थी॥
सोते हुये स्वयं सेवक यह आहट कुछ सुन पाई थी।
देख रोशनी बैठे होगये दिल में दुबधा छाई थी॥
पड़े हुये एक खाट पै गांधी, आंख नहीं खुल पाई थी।
घेर लिया चौतरफा से तब ख़बर महात्मा ने पाई थी॥
छटी मई सन तीस को .... (१)
ज़ालिम गवरमिंट ....
आंख खोलकर बैठ होगये यह आवाज़ सुनाई थी।
आप चाहते हो क्या मुझको पमतरा चतुराई थी॥
हाथ गिरफ्तारी की ले ब्राहमने ख़बर सुनाई थी।
अठारासै सत्ताईस सन में जो क़ानून बनाई थी॥
रेगुलेशन पच्चीस के माफ़िक़ इन की बंदगी आई थी।
[illegible] जहां दांतन कर रहे सेवक मंडली आई थी॥

रह गये बापू के धोरे दिल में दुबिधा छाई थी।
मजिस्टरेट से गांधी बोले ये फ़रमान सुनाई थी॥

छटी मई सन तीस ....
(२

ज़ालिम गवरमिन्ट ....
पढ़ो कोई वारंट होय तो गांधी ने फरमान सुनाई थी
टब वारन्ट पढा या उस ने और यह खबर सुनाई थी॥
गांधी के कामों से देखो गवरमिन्ट घबराई थी।
लिखा हुवा वारन्ट में ऐसा तब यह दफा लगाई थी॥
जब तक चाहे गवरमिन्ट बस होनी नहीं रिहाई थी
पड़े रहो तुम जेल के अंदर ज़ालिम ने ठहराई थी॥
गांधी को लारी में रख कर परवदा जेल दिखलाई थी
रातो रात उड़ा कर लारी जेल के पास पहुंचाई थी
छटी मई सन तीस ....
(३)

ज़ालिम गवरमिंट ने ....
रास्ते सड़कें बंद कराये कैसी ये चतुराई थी।
हाय निहत्थे को जा पकड़ा कायरता दिखलाई थी॥
पांच मई को दिल्ली में भी खबर यही सुन पाई थी।
हिन्दू और मुसलमानों ने झट हड़ताल कराई।
गुज़र गया दिन हंसी खुशी से हुई न कहीं लड़ाई।

शाम को जा कर बाग़ के अंतर भारी सभा रच बड़ी भारी
यहां गिरफ़्तारी गांधी की पबलिक को सरा रहा ली
छुटी मई की फे पबलिक से यहां सड़क मक्खी कुत
छुटी मई सन तीस
ज़ालिम गवरमिंट ने ....
एक भारी जलूस बनाया करके हड़ताल नगर में
जगह जगह पर जल और शर्बत कहीं कहीं पे दिया को ना
एक लाख से ज्यादा पबलिक अंदाज़े में आई थी।
दो हज़ार माता और बहनें इस जलसे में आई थी॥
गुजर रहा जलूस खुशी से कोई नहीं घबराई थी
चौक चांदनी, खारीबावली में जैजै कार मनाई थी॥
जब जलूस सदर में पहुंचा शोभा अजब दिखाई थी
तेली वाड़ा फरस पुल होकर के पलाश फहराई थी
छुटी मई सन तीस ....
ज़ालिम गवरमिंट ने ....
कशमीरी दरवाज़े तक बस जैजै कार मनाई थी।
फिर जत्था स्त्रियों का चल कर आन कचहरी आई थी।
आ कर धूप में खड़ी हो गई ये आवाज़ लगाई थी।
आज कचहरी बंद करो हड़ताल करानी चाही थी।

फ़ के के जल्लूस में चलकर ठंडी राह दबाई थी।
ग्वालांटर अंग्रेज को इन के रोन सामने आई थी॥
ने इशारा किया उसे पर मोटर नहीं ठहराई थी।
धका दिया जल्लूस पै मोटर चोट कई के आई थी॥
टी भई सन तीस को ....

(६)

ज़ालिम गवरमिन्ट ने ....
आकर टेलीफून किया तब पुलिस को खबर सुनाई थी।
लारी भर कर हाथ पुलिस को फ़ौरन वहां पर आई थी॥
लारी से सब उतर पड़े पबलिक पर मार बजाई थी।
दे दे लाठी फाड दिया सिर इन को दया न आई थी॥
हुई भई सन तीस को ....

(७)

ज़ालिम गवरमिन्ट ने ....
अरहमा किये सैंकड़ों यहां पर लारी चारभराई थी।
पुलिस लाद कर ले गई सब को लारी तेज़ चलाई थी॥
गये निहत्थे बेकस इन को लापरवाई थी।
ज़ख्मी हुए पांच सौ छसौ चोट जिन्होंने खाई थी॥
दगा करी देहली की पुलिस ने निरदयता दिखलाई थी
लाठी और बंदूकों से पबलिक को मार गिराई थी॥
सिक्खों के गुरुद्वारे पर भी गोली खूब चलाई थी।

पहले ठंडी सड़क पै लाठी मरदों पर बरसाई थी
छटीमई सन तीस को ....
(८)
ज़ालिम गवरमेंट ने ....
फेर कचहरी में तिरियो पर ताकत जा अज़माई थी।
निर अपराध खड़ी थीं माता उन पर मार बजाई थी॥
सबसे आगे एक छोटी सी कन्या इन को पाई थी।
झंडा लिये खड़ी थी सन सुख उस पर मार बजाई थी॥
झंडा नहीं दिया देवी ने मार बहुत सी खाई थी।
फेर पुलिस के आगे बढ़ कर लाठी खूब चलाई थी॥
कई बहन और माताओं को ज़खमी हाय बनाई थी
हाय रिसाले अबलाओं पर मशीन गन दिखलाई थी॥
छटी मई सन तीस को ....
(९)
ज़ालिम गवर मिन्ट ने ....
पिटी लाठियों से दुष्टों की दिल में नहीं घबराई थी।
डटी रही बुज़दिलों के सन सुख मार बहुत सी खाई थी॥
इस पर भी संतोष हुआ ना शहर में धूम मचाई थी।
फतेह पुरी से घंटा घर तक लाठी खूब चलाई थी॥
घंटा घर से कोतवाली तक अंधा धुंद मचाई थी
लंगड़े लूले किये निहत्थे सिर की फांक बनाई थी॥

फव्वारा कोलवाली आगे दिल की हाविस मिटाई थी।
हाय ग़रीबों पर दुष्टों ने मारा मार मचाई थी॥
हटी मई सन तीस को ....
(१०)
ज़ालिम गवर्मिन्ट ने ....
फिर भी बाकी रही तमन्ना तब बंदूक चलाई थी।
हाय निहत्थे खड़े हुओं को नाहक़ जान गवांई थी॥
लगी गोलियें दूकानों में बैठों पर बरसाई थी।
निरअपराधी मार दिये पर इन को दया न आई थी॥
नमक हरामी पुलिस निकल गई इन को शर्म न आई थी
कहने से बस दुष्ट जनों के हम पर मार चलाई थी॥
फव्वारे पर पब्लिक ने भी ईंट खूब बरसाई थी।
लारी रुक पुलिस की भर कर फव्वारे ढिंग आई थी॥
हटी मई सन तीस को ....
(११)
ज़ालिम गवर्मिन्ट ने ....
गुस्सा खा कर के पब्लिक पर गोली खूब चला थी।
पुलिस तुल गई खून के ऊपर सिक्खों ने समझाई थी॥
इसी बात पर गुरुद्वारे पर गोली खूब चलाई थी।
सिख मज़हब के गुरुद्वारे की ज़रा न दहशत खाई थी॥
की तौहीन गुरू नानक की इन को ना परवाही थी।

सिख बहुत से घायल होगये शरण गुरु की पाई थी ॥
छटी मई सन तीस को ....

(१२)

ज़ालिम गवरमिन्ट ने ....

पकड़ लिये सिख कुतबली में नज़र कैद ठहराई थी
पढ़े लिखे सिखों ने कुछ सिक्खों की बदछुड़ाई थी ॥
हिन्दू और मुसलमानों को नाहक़ जान गवाई थी।
दिल्ली के बाशिन्दों पर तो दहशत खूब बिठाई थी ॥
मार मार कर हाय पुलिस ने पबलिक दारूब भगाई थी।
तरवमी किय निहत्थे बेकस कई की जान गवाई थी
रिशाय लपें तो गवरमिंट ने पूरी इन्हें सिखाई थी।
जान लिरपाया बहादुरी में तनख्वा भी बढ़वाई थी ॥
छटी मई सन तीस को ....

(१३)

ज़ालिम गवरमिन्ट ने ....

सात मई को मोहुओं की लाशें खूब सजाई थी।
पबलिक कई हज़ार साथ में जमना जी पहुंचाई थी ॥
प्रेम प्रेमक दाह कर्म कर पबलिक वापस आई थी।
[illegible] सात मई को यहां हड़ताल मनाई थी
[illegible] खुली दुकानें चरखा घर घर ढाई थे
विजयपवर बार बजे पबलिक को खबर सुनाई थी

दफा एकसौ चवालीस भी हम पर आज लगाई थी
सभा न करना किसी जगह पर ज़ुबां बंद करवाई थी
छटी मई सनतीस को ....
(१४)
ज़ालिम गवरमिन्ट ने ....

पांच आदमी कहीं न ठहरें ये सख्ती दिखलाई थी
कोई मीटिंग या कोई जल्सा पबलिक नहीं करपाई थी
हाय हाय मचगई शहर में नाहक़ जान गवाई थी
आठ मई को कांग्रेस ने दिल में ये ठहराई थी॥
दफा तोड़नी है क़ानूनी यही समझ में आई थी।
एकपार्टी है मरदों की झंडा लेकर आई थी॥
अफ़सर थे इद्रीस मियां उसने आवाज़ लगाई थी
वो हरहे क़ानून दफा जो हमपर सख्त लगाई थी
छटी मई सनतीस को ....
(१५)
ज़ालिम गवरमिन्ट ने ....

घूम घूम कर बाज़ारों में जैजै कार मचाई थी।
एक बार तो कोतवाली से गुजर पार्टी आई थी॥
फिर दुबारा यह पार्टी कोतवाली ढिंग आई थी।
पवाद लिपा अथ्थे को पुलिस ने इन को क़ैद कराई थी
करवृ परराज़ पार्टी दूजी ओर बनाई थी।

झंडा लेकर कुछ मरदों ने शहर में धूम मचाई थी ॥
तोड़ दिया क़ानून जुर्म का हम पर दफ़ा लगाई थी ।
फेर घूमते शाम तलक पर इन को पकड़ न आई थी ॥
छटी मई सन तीस को ....

(१६)

ज़ालिम गवरमिन्ट ने ....

टूट गया क़ानून जुर्म का जै जै कार मनाई थी ।
फेर तीसरे रोज़ शहर में बक़राईद मनाई थी ॥
हिन्दू और मुसलमानों में प्रेम मुहब्बत छाई थी ।
गुज़र गया दिन हंसी खुशी से कहीं न रंजिश पाई थी
दिल्ली की ये कथा हकीकी आंखों देखी गाई थी
चश्मदीद यह लिखा नज़ारा पुलिस की गुंडाशाही की
भारत माता के कारण वीरों ने जान गवाई थी ।
बुरा किया दिल्ली की पुलिस ने इन को मारा बाद थी
छटी मई सन तीस को दिल्ली में गोलीबारी हुई थी ।
ज़ालिम गवरमिन्ट ने बेकस दुन्या को मरवाया थी ॥

ग़ज़ल

ज़ालिमों के ज़ुर्म को बिल्कुल मिटाना चाहिये ।
अब तो कुछ वीरों तुम्हे करके दिखाना चाहिये ॥
जब तुम्हारे देश में है जंगे आज़ादी छनी ।
क्या तुम्हें इस वक्त में भी मूंह छिपाना चाहिये ॥
आप के सब से बड़े नेता चले गये जेल में
कुछ तो ग़ैरत आप को भी शर्म आनी चाहिये ॥
मर्द कहलाते हो तुम कुछ तो करो मरदानगी
वरना हाथों में तुम्हें चूड़ी चढ़ानी चाहिये ॥
देश की और क़ौम की हालत को जो बतलाते नहीं
उन के माथे पर भी स्याह टीका लगाना चाहिये ।
गाय और सूअर की चरबी खून से लथपथ बने ।
ऐसे नापाकों के कपड़ों को जलाना चाहिये ॥
अब विदेशी को न बरतो कोई कपड़ा हो या बाजा
ऐसे सब सामान पर ला होल पढ़ना चाहिये ।
हुक्म है गांधी का ये सब बन्द चलबाज़ार कपड़ा
शाह बर दद्दूर की लंगोटी तवा क्या लीन पारेख में या

भजन

मबदो ढोलयो रे रही भारत माल दुलार
तुम भारत वीरों आवो रे ले माता पर भेद सदा दारे

फ़कवाद बस ल्यो स्वराज ।
मरनो होल्यो रे : रही भारत मात पुकार
अब दिन मतना कीरियो रे ❖ मत मरने से तुम डरियो रे
भारत को करो अज़ाद ।
प्यारा होल्यो रे : रही भारत ....
हम गानन बीर कहावें रे ❖ मरने से क्यों घबरावो रे
अब मरे मात के काज ।
प्यारी ....
अति मने ज़ुल्म उठाया रे ❖ गांधी को क़ैद कराया रे
गुरुदास को ल्यो छुड़ाय ।
अरवा होल्यो रे : रही ....
इस का क़ानून मिटा दयो रे ❖ भारत से इन्हें हटा दो रे
करो सत्याग्रह संग्राम ।
अगम होल्यो रे : रही भारत मात पुकार ।।

ग़ज़ल

ख़ाक मुल्क भारत की ये आख़िरी लड़ाई है ।
न होगा जंग फिर ऐसा महात्मा ने बताई है ।।
अगर तुम स्वर्ग चाहते हो या जन्नत चाहिये तुमको
तिलक तो ना जल्दी से शुरू हो गई लड़ाई है ।।

करो तुम जंग दुशमन से अहिंसा धार कर मन में।
पर एसा वक़्त पाओगे हवा ये रोशी ... जो है राक
करो तुम हिम्मते मरदां मदद देगा खुदा ता को।
बनाया आसमां जिसने ज़मीं जिसने बनाई है।
मरेगा देश के हक़ में वही ग़ाज़ी कहाये गा।
रहेगा मुं छिपा कर जो वही राहे फ़रारी पे॥
तुम्हें रो जेल की घुड़की दिखा कर के डरावेंगे।
मगर तुम एक मत सुनना करो इन पर चढ़ाई।
तुम्हारे धर्म ईमां की सचाई आज़मा लेने को।
ज़माने भर ने आ कर के नज़र तुम पर लगाई है॥
न करना ख्याल ये दिल में कि हम आज़ादी नहीं होंगे
ये थोड़े दिन की सख़्ती है जो लालिन ने कमाई है॥
मुसीबत जितनी सहते हो तुम्हें राहत दिखावेगी।
हिना जो पिस गई पत्थर से वो ही रंग लाई है॥
वो पछतायेगा पीछे से न माने बात जो गांधी की।
आसूफ़ को हटा दीजे वतन की ये लड़ाई है॥

भजन

मनौं रखनी सरकार ज़ालिम कर्ती में बतनी।
धन थी व्यापार करन को। ... दार का हार. जा

हमारो क्या लागे । नाती न रिश्तेदार. ज़ा०
ग़रीब किसान लगान लगा कर । भूखे दिये हैं मार. ज़ा०
लूट से इसकी बचाने कोई । बढ़ई, चमार, लुहार. ज़ा०
कानूनों का जाल बिछाया । ऐसो है मक्कार . ज़ा०
हिन्दू मुसलिम जाट बनिया । लड़ाये बीच दरबार. ज़ा०
खेतों से करें पूरी उगहाई । मलबे की भरमार . ज़ा०
जलियां वाले बाग़ के अंदर । मारे कई हज़ार. ज़ा०
गांधी के अब बनो सिपाही । करो देश उध्दार. ज़ा०
झंडा आज़ादी का लेकर । घर घर करो प्रचार. ज़ा०
मिले स्वराज्य तो निकले कांटा । हो जाये बेड़ा पार. ज़ा०
पेशावर में गोली चला कर । मारे कई हज़ार . ज़ा०

पेशावर के शहीदों का संदेश ।

ज़ालिम हमारे ऊपर गोली चला रहे हैं ।
हम तो शहीद होकर जन्नत को जा रहे हैं ॥
पर याद रखना तुम भी ज़ालिम ये रह न जायें । १
कुछ दिन में हम भी वापिस अब फेर आ रहे हैं ॥
हम तो शहीद हो कर जन्नत को जा रहे हैं ।
ज़ालिम हमारे ऊपर गोली चला रहे हैं ॥
स्वराज्य हमारा हक है हम हिन्द के हैं मालिक । २
इस हिन्द के लिये हम ये सर चढ़ा रहे हैं ॥
हम तो शहीद हो कर जन्नत को जा रहे हैं
ज़ालिम ....

लानत है यार उन को जो हैं गुलाम इनके ।
कहने से दुश्मनों के छुरियां चला रहे हैं ॥ ३

हम तो शहीद होकर जन्नत को जा रहे हैं
ज़ालिम हमारे ऊपर ....

ऐ भाइयो पुलिस के ऐ भाई फौज वालो ।
हम तो तुम्हारे हक़ में इन्साफ चाह रहे हैं ॥ ४

हम तो शहीद हो कर जन्नत को जा रहे हैं
ज़ालिम हमारे ....

यह धर्म है तुम्हारा तुम छोड़ दो गुलामी ।
हम आप की वजह से ये खूं में नहा रहे हैं ॥ ५

हम तो शहीद हो कर जन्नत को जा रहे हैं
ज़ालिम हमारे ....

यह आर्जू हमारी तुम मर मिटो इसी पर ।
आज़ाद होके हटना लो हम तो जा रहे हैं ॥

हम तो शहीद होकर जन्नत को जा रहे हैं
ज़ालिम हमारे ऊपर गोली चला रहे हैं ॥

आज़ादी का दीवाना

बजाया फिर के बेला ताशे का डंका है ज़माने में ।
वही पापा हमारे वास्ते हैं जेलखाने में ।
मर साबा लार्ड अर्विन ने है सत्याग्रह के रमें ।
एप. अँटीपन घटेगा अब तो गांधी के फन्साने में ।।
मगर रात भलतो दिल में कि पकड़ा एक गांधी है ।
यहाँ तो न हो बत्तीस गांधी अब तो हैं ज़माने में ।।
वतन के वास्ते अब हम लड़ेंगे जंग आज़ादी ।
लिखी है जेल की रोटी हमारे आबोदाने में ।।
हमें तो शर्म आती है कि चर्खा ही चलाने में ।
हमारे ही लिये हैं आज गांधी जेलखाने में ।।
या तो यह जान ही जायेगी या फिर होगी आज़ादी ।
कसर "बेदिल" न रक्खेगा मुकद्दर आज़माने में ।।

इति

ऐतिहासिक पु० ।।।) | काकोरी शहीद उर्दू १)
शुद्धों की तलवार ।=)।। | खूनी राज्य ।।।)

भारत बुक एजेंसी नई सड़क देहली